इस्लाम एक नज़र में

अनुवाद
अब्दुस्समी मो. हारून
संशोधन
मो. ताहिर हनीफ

मकतबा अलफहीम
मऊनाथ भंजन-उ.प्र.

نبذة عن الإسلام

(باللغة الهندية)

इस्लाम एक नज़र में

पुस्तक का नाम	:	इस्लाम एक नज़र में
अनुवाद	:	अब्दुस्समी मो० हारून
संशोधन	:	मो० ताहिर हनीफ
प्रकाशन वर्ष	:	2012
मूल्य	:	45/-
प्रकाशक	:	मकतबा अलफहीम मऊ

MAKTABA AL-FAHEEM

Raihan Market, 1st Floor, Dhobia Imli Road

Sadar Chowk, Maunath Bhanjan - (U.P.) 275101

Ph.: (O) 0547-2222013, Mob. 9236761926, 9889123129, 9336010224

Email : maktabaalfaheemmau@gmail.com

WWW.faheembooks.com

نبذة عن الإسلام

इस्लाम एक नज़र में

संकलनः

रिसर्च डिवीज़न दारूस्सलाम

हिन्दी अनुवादः

अब्दुस्समी मुहम्मद हारून

संशोधनः

मुहम्मद ताहिर हनीफ़

MAKTABA AL-FAHEEM
Raihan Market, 1st Floor, Dhobia Imli Road
Sadar Chowk, Maunath Bhanjan - (U.P.) 275101
Ph.: (O) 0547-2222013, Mob. 9236761926, 9889123129, 9336010224
Email :faheem.books@gmail.com
WWW.faheembooks.com

विषय सूची

● ● ●

बिसमिल्ला हिर्रहमानिर रहीम

अल्लाह कौन है?

अल्लाह एक खास नाम है जो सच्चे माबूद (पूज्य) के लिये है। जो अकेला है, और जिस में उसके सभी शानदार नाम और तमाम ख़ूबियाँ शामिल हैं। अल्लाह तआला एक है और बेमिसाल है। उसे लड़का, साझी या बराबरी करने वाला कोई नहीं है। वह अकेला इस दुनिया का पैदा करने वाला और उसे रोज़ी पहुँचाने वाला है। सभी जीव उसके एक होने, पाक होने और मालिक (रुबूबीयह)[1] पर गवाह हैं सो वही उसके नाम और ख़ूबियों में बेमिसाल होने पर गवाह है। उसका तत्व किसी दूसरे के तत्व से मेल नहीं खाता। उसके नाम जैसा कोई नहीं है। वह एक है, अकेला है और न दिखाई देने वाला

[1] मालिक होना अरबी में रुबूबीयह कहलाता है। यह रब्ब शब्द से बना है, जो 'मालिक' का सूचक है और जो पैदा करने वाला और पालने वाला अर्थ बताता है, और वह जो ज़िन्दगी और मौत देता है।

है। वह ऐसा मालिक है जिस के बिना कोई कार्य पूरा नहीं हो सकता, और अन्ततः जिसे ही मालिक होना सम्बन्धित है। वह न तो अपनी ज़ात से पैदा करता है और न हीं पैदा किया गया है। वह न तो किसी चीज़ में निहित है, न ही कोई दूसरा उसमें निहित है। सभी जीव उसके मोहताज और जरूरतमंद हैं, परन्तु वह किसी का जरूरतमंद नहीं।

अल्लाह तआला सब से शक्तिशाली और सब कुछ जानने वाला है, एक मात्र वह है जिस का इल्म छिपी और ज़ाहिर सभी चीज़ों को पूरे तौर से घेरे है। परन्तु वह बहुत महान और परे है इस बात से कि उसे अपने जीवों के ज्ञान के द्वारा घेरा या मापा जा सके। अल्लाह तआला सब से बड़ा वही सभी चीजों का मालिक है, जो अपने सभी कार्य के अंजाम देने में पूरे तौर से आज़ाद है। वह बहुत दयालु और मेहरबान है, एक ऐसा जिसके दया की सीमा नहीं है और सभी चीज़ को घेरे है। वह अन्याय और ज़ुल्म से बहुत दूर है। उसका न्याय पूरे संसार में है जहाँ कोई भी चीज़ उसके आदेश से बाहर नहीं है। कोई नहीं जो उसके मालिक होने में हिस्सा ले सके न ही वह अपने जीवों में से किसी को सहायक के रूप में लेता है। वह तमाम दुनिया का मालिक है। वह सातों आकाश के ऊपर है, अपने सिंहासन पर ऐसे ढंग से है जो उसकी महानता के लायक है।

● ● ●

कुरआन क्या है?

कुरआन अल्लाह की बात है। यह मख़लूक (प्राणी) नहीं है इसे जिब्रील (अलैहिस्सलाम) के ज़रिये मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दिया गया था, जो उन आयतों को याद कर लेते थे जिन्हें आप प्राप्त करते थे, अपने उन साथियों को पढ़कर सुनाते थे जो आप के साथ होते और उन्हें तुरन्त लिखने का आदेश देते थे। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वह्यी (प्रकट) की गई कापी का एक हिस्सा अपने घर में रखते। यह अल्लाह की अंतिम किताब है जो तेईस वर्षों की मुद्दत में किस्तों में उतारी गई थी। यह ११४ छोटे बड़े चैप्टरों (सूरह) में बंटा है। इन में से कुछ चैप्टर मक्का में और कुछ मदीना में उतारे गए थे। मक्का वाले चैप्टरों में मूल रूप से विश्वास (अकीदा) जैसे तौहीद (एकेश्वरवाद), अल्लाह के वजूद में होने की निशानियां, कयामत, मौत के बाद जीवन और क़यामत के दिन के बारे में बातें बताई गई हैं। अल्लाह के एक होने का अकीदा

आदम से लेकर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक भेजे गए अल्लाह के सभी संदेष्टओं के संदेशों का सब से अहम बिन्दु था। और वह चैप्टर जो मदीना में उतारा गया इबादत और जीवन के सभी पहलुओं से सम्बन्धित कामों पर शामिल हैं।

कुरआन की विश्वासनीयता

किसी भी जाति या समाज ने अपनी मज़हबी किताब पर उतना ख़्याल, सम्मान और सुरक्षा नहीं किया जितना कि मुस्लिम जाति या समाज ने कुरआन का ख़्याल सम्मान और सुरक्षा किया है। दूसरी मज़हबी किताबें जो क्रम में पहले आईं उनके विपरीत, कुरआन मुसलमानों के किसी खास ग्रुप या ख़ानदान के हाथ में नहीं है कि कोई उस के आदेश बिगाड़ने या उस में बदलाव के बारे में शक कर सके। इस के बजाए यह सभी मुसलमानों की पहुंच में है मुसलमानों को आदेश है कि वे इसे अपने दैनिक नमाज़ों में पढ़ें और अपने सभी झगड़ों में इसके पास आंतिम न्याय के लिए आयें। कुरआन को उस समय जमा किया गया जब कि पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़िन्दा रहते वे लोग जिन्होंने इसे याद किया था, ज़िन्दा थे। अल्लाह ने इसकी हिफ़ाज़त का वादा किया है। यह क़यामत तक ऐसे ही महफ़ूज़ रहेगा। मुसलमान उसी कुरआन को पढ़ते और तिलावत करते हैं जो पैग़म्बर और आप के साथियों के समय में पढ़ा और उसकी तिलावत की जाती थी। कुरआन में एक अक्षर भी न तो जोड़ा गया है और न ही उस से हटाया गया है। कुरआन की जाँच पड़ताल के बाद डा० मोरीस बुकाई ने नतीजा निकाला:

"इसकी बिना विवाद की विश्वसनीयता को धन्यवाद, कुरआन वह्यी की गयी पुस्तकों में बेमिसाल स्थान रखता हैं।''[1]

कुरआन एक चमत्कार के रूप में

अल्लाह तआला ने अरब और ग़ैर अरब को चैलेंज किया कि वह पाक कुरआन के समान ले आऐ। फिर यह चैलेंज दस चैप्टरों तक कम कर दिया गया, फिर भी वे इस में नाकाम रहे। आखिर में अल्लाह तआला ने चैलेंज किया कि इसकी तुलना में कोई एक चैप्टर ही बनाओ, वे इस चैलेंज को भी नहीं कुबूल कर सके। वे समझ गए कि हक़ीकत में यह अल्लाह, तमाम दुनिया के मालिक, के सिवा किसी और की ओर से नहीं हो सकता।

पूर्व के पैग़म्बरों के चमत्कारों में अन्तर, जो उनकी सच्चाई को साबित करता, यह था कि वह उन की अपनी ज़िन्दगी तक ही प्रभावी होता, जब कि कुरआन का चमत्कार बाकी है और प्रभावी रूप से सदा बाकी और चैलेंज करता हुआ क़यामत तक बाक़ी रहेगा।

---

[1] डा० मोरीस बोकाई एक चिकित्सक हैं जो कुरआन के वैज्ञानिक पहलुओं से बड़ी दिलचस्पी रखते हैं। उन्होंने अरबी सीखी और कुरआन को उसके असली मूलसूत्र में अध्ययन करने की कोशिश की। वह कुरआन के संक्षिप्त वैज्ञानिक बयान से बहुत हैरान थे अपने अध्ययन के नतीजे में उन्हों ने इस्लाम कुबूल कर लिया।

कुरआन एक विशाल क़ानून के रूप में

आसमानी क़ानून (शरीआ) के माध्यम से कुरआन व्यवहारिक स्तर पर इस्लाम का सब से विशाल विचार स्थापित करता है। यह इसलिये विशाल हुआ है क्योंकि नियम क़ानून सहित उच्च चरित्र के उसूल और उन मजहबी विचारों को भी शामिल है जिन का पालन करना प्रत्येक मुसलमान के लिए जरूरी है। इस्लामी शरीअत सिर्फ मुसलमानों के ही लायक़ नहीं है, बल्कि हर समय के सभी मानव जाति के लिए भी योग्य है। इस्लामी क़ानून मानव के सभी कार्यों पर, प्रत्येक आदमी के आम और निजी कर्त्तव्यों को अल्लाह की ओर दूसरे लोगों की ओर से खींच कर लाता है। मनुष्य द्वारा बनाये क़ानून बदलाव किए जाने वाले विषय और विचारों और सिद्धांतों पर आधारित हैं। जब कोई क़ानून बनाने वाला शक्ति हासिल करता है या नया सिद्धांत ज़ाहिर होकर उन्हें आकर्षित करता है, तो उस के अनुसार नियम क़ानून बदल दिए जाते हैं। जाति मज़हब का पाक क़ानून कभी न बदलने वाला और अटल है क्योंकि वह एक अल्लाह जिस ने इसे बनाया है सदा ज़िन्दा रहने वाला और हमेशा रहने वाला है। वह पैदा करने वाला है जिसने मानव को पैदा किया और उनके लिए वह सब कुछ उपलब्ध कर दिया जो उनके लिए अन्त तक उनकी जरूरतों के अनुरूप है। इस कारण से, कुरआन सब से अंतिम संदेश के अंतिम वह्यी होने के कारण पूर्व की सभी मज़हबी किताबों को मंसूख़ (निरस्त) देता है।

कुरआन की कई भविष्यवाणियां पूरे तौर पर सम्पन्न हुई हैं। अल्लाह ने उन मुसलमानों से जो अच्छे कार्य करते हैं, वादा किया कि उन्हें वह बेशक धरती पर विजयी बनाएगा। और हकीकत में उन्होंने सैकड़ों वर्ष तक दुनिया के अधिकतर भाग में शासन किया। कुरआन ने रूमियों के पारसियों[1] के विरुद्ध फ़तह की भविष्यवाणी की। अल्लाह तआला कहता है:

"रूमी पराजित हो गए, और वे पराजित होने के बाद विजयी होंगे। तीन से नौ वर्ष के अन्दर। मामले का फैसला पहले और बाद में सिर्फ अल्लाह ही को है। और उस दिन मुसलमान खुश (उस जीत पर जो अल्लाह रूमियों को ईरानियों के विरुद्ध देगा) होंगे।'' (३०:२-४)

एक व्यक्ति जब कुरआन का अध्यन अच्छे तरीके से करे तो वह समझ लेगा कि वह भविष्यवाणियां जो इस में हैं, वह अटकल और अनुमान से बहुत परे और दूर हैं। ऐसा इस लिए है कि वह एक जिस ने इस को उतारा है, वही एक है जिस ने क़यामत तक होने वाली सभी घटनाओं के घटित होने का फैसला कर दिया है।

---

[1] इस भविष्यवाणी का हवाला ३०वें चैप्टर सूरह अल-रूम में पाया जाता है। यह उस युद्ध की ओर संकेत है जो ६१४ ई० में ईरानियों और रूमियों के बीच हुई थी, जब रूमियों की हार हुई थी। उस के आठ वर्ष बाद रूमियों ने ईरानियों को हरा दिया और कुरआन की भविष्यवाणी पूरी हुई।

विज्ञान और कुरआन

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम निरक्षर थे। आप न तो पढ़ सकते थे और न लिख सकते थे, आप मक्का में इस हालत में पले-बढ़े जहाँ कोई विद्यालय (मदरसा) नहीं था। आप उस वैज्ञानिक माहौल से बहुत दूर थे जो उस समय सीरिया, असंकदरिया, एथेंस या रोम में पाया जाता था। उस के अलावा वैज्ञानिक बातें जो कुरआन में बयान हैं वह उस दौर में नहीं जानी जाती थीं यानी सातवीं शताब्दी में लोग इस की कोई जानकारी नहीं रखते थे। कुरआन के पढ़ने और उसके मूल अरबी टेक्सट के गहरे अध्ययन के बाद डा० मोरिस बुकाई हैरत करते हैं:

"मैं कुरआन में एक भी ग़लती नहीं पा सका। मैं रुकता था और अपने से प्रश्न करता था: यदि एक मनुष्य इस कुरआन का लेखक था, तो वह सातवीं शताब्दी में उन को कैसे लिख सकता था जो आज नए वैज्ञानिक ज्ञान की रौशनी में बताए जाते हैं? उन सबूतों की रौशनी में जो मेरे सामने थे मुझे मानना पड़ता था कि: कुरआन में एक भी ऐसी बात नहीं है जो एक वैज्ञानिक नज़र के खिलाफ़ हो। मैंने यही जाँच पुराने बाईबल और ईसा मसीह की शिक्षाओं वाली पुस्तक पर किया, जो सदा उसी वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण की रक्षा करते हैं। सब से पहले मैं पहली किताब, जेनेसिस, से आगे नहीं जा सका, यह देख कर कि पूरे तौर पर उस में ऐसी बातें हैं जो आज के नए विज्ञान के ढले लोहे के समान हकीकतों से परे हैं।[1]

---

[1] The Bible, the Quran and the Science, P.120

डा० बुकाई ने कुरआन में बयान बहुत से वैज्ञानिक तथ्यों का अध्ययन किया जैसे दुनिया का जन्म, खगौलशात्र, जानवर और वनास्पति जीवन के अधिराज्य, मानव का पुनः जन्म लेना और अन्य सम्बंधित विषय। मैं, संक्षेप में, ऊपर लिखे विषयों में से दो विषयों को चुनूंगा कि पाठकों की नज़रों को इस ओर खींच सकूं जो इस छोटी सी पुस्तक के मकसदों में से भी है।

आकाश और धरती का जन्म

दुनिया के जन्म के सम्बन्ध में आदमी का ज्ञान बहुत सीमित है। वैज्ञानिकों ने कुछ कल्पनाएं और क्रमिक विकास के सिद्धांत पेश किए हैं जो एक ही विषय पर केन्द्रित हैं: प्रारम्भिक आग का गोला और प्रारम्भिक मैटर और एन्टी मैटर युग। सिद्धांतों के अनुसार यह सृष्टि मूल रूप से मजबूती के साथ एक दूसरे पर क्रिया करने वाले कणों पर सम्मिलित है। इन्साइक्लोपेडिया ब्रिटानिका के अनुसार प्रारम्भिक मैटर और एन्टी मैटर ने अन्ततः एक दूसरे को मिटा दिया। वह कण जो बच गया उस ने मौजूद दुनिया का रूप ले लिया।[1] दुनिया के विकास की मूल प्रक्रिया कुरआन में बड़े सादे ढंग से पेश किया गया है। अल्लाह तआला अपने पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को काफ़िरों से पूछने का आदेश देता है:

"(उन से) कहिए: क्या तुम उस (अल्लाह) का इंकार करते हो जिस ने धरती को दो दिन में पैदा किया, और तुम उस के

---

1 Encyclopadia Britanica (15th ed.) Macropaedia, V.18, P.1008

लिए साझीदार बनाते हो वह सारी दुनिया का मालिक है? और उस ने इस (धरती की) सतह पर मज़बूत पर्वत गाड़ दिये और उस में बरकत दी, और चार दिन में उस में रहने वालों के) भोजन की भी व्यवस्था कर दी जरूरतमंदों के लिए समान रूप से। फिर वह आकाश की ओर उच्चय हुआ जबकि वह धुआं था उसने इसे और धरती से कहा: 'तुम खुशी से आओ या नाखुशी से आओ!' दोनों ने कहा: हम लोग खुशी से आज्ञा पालन में आए। फिर उस ने दो दिन में सात आसमान बना दिए, और हर एक (सातों में से) को उसके काम अलग कर दिए। और हम ने सब से निचले आकाश को तारों से सजा दिया और उसे सुरक्षित कर दिया। यह फैसला है अल्लाह, सारी ताकत वाला सब कुछ जानने वाले का।'' (४१:९-१२)

और अल्लाह कहता है:

"क्या काफिर नहीं जानते कि आकाश और धरती आपस में मिले जुले थे फिर हम ने उन्हें अलग किया, और हर सजीव वस्तु को हम ने पानी से पैदा किया।[1] क्या ये लोग विश्वास नहीं करेंगे?'' (२१:३०)

---

[1] कुछ लोगों ने इस आयत से ग़लत अर्थ निकालते हुए कहा कि यह तो डारविन के क्रमिक विकास के विचार की पुष्टि करता है। आयत का अर्थ है कि अल्लाह तआला ने दुनिया के विकास के लिए उसकी वर्तमान स्थिति तक के लिए पानी को चुना जो सभी सजीव वस्तु के लिए मूल तत्व है।

एक इकाई के दो या अधिक भाग में वितरित होने की कल्पना, और वह दैवी धुआं जिसकी चर्चा ऊपर की गई है वह वास्तविक, वैज्ञानिक आंकड़ा के अनुरूप है। खगोलशात्र के ज्ञानी भौतिक विज्ञानी, श्री जेम्स जींस ने इन्साइक्लोपेडिया ब्रिटानिया में लिखा:

"हम ने पाया है कि, जैसा कि न्यूटन ने पहले एक अत्यवस्थित गैस का अनुमान लगाया है जो ठोसपन में एक समान है और बहुत मात्रा में है, संचालन शक्ति से अस्थिर होगा: उस का केन्द्रीय बिन्दु उस में परिवर्तित होने के लिए झुकेगा, अन्ततः जिसके आस पास सभी मामले एक आकार का रूप ले लेंगे। इस विचार के आधार पर उन्होंने यह प्रस्ताव दिया कि सभी दैवी वस्तु एक टुकड़े की प्रक्रिया से पैदा होते हैं।[1]

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि अन्तर कार्यक्रम में सभी तत्वों के एक रूप में होने की खोज लगाने में सहायता की, जिस से चाँद, सूर्य और दूसरे ग्रह बने हैं। कुरआन में बयान इस प्रकार की बातें संसार के पैदा करने से सम्बन्धित हैं, जो लगभग चौदह सौ वर्ष पूर्व उत्पन्न हुआ'' डा० बुकाई ने नतीजा निकाला, स्पष्ट रूप से हम उन को मानव व्याख्या के अधीन न बनायें।

मानव का पैदा किया जाना

आदमी के पैदा किए जाने सम्बन्धी पेचीदगी को केवल वैज्ञानिक और मेडिकल यंत्रो के अविष्कार के बाद समझा गया, मुहम्मद सल्लल्लाहु

---

1 इन्साइक्लापेडिया ब्रिटानिका (15th ed.) मैक्रोपेडिया, V. 18, P-1009

अलैहि वसल्लम की मृत्यु के सैंकड़ों वर्ष बाद, अब भी कुरआन उन स्टेजों के बारे में बतलाता है जिन के माध्यम से आदमी का गर्भ गुज़रता है। अल्लाह तआला कहता है:

"वास्तव में हम ने इंसान को मिट्टी के सार (खुलासा) से पैदा किया। फिर उसे हम ने वीर्य के एक बूंद के रूप में एक सुरक्षित स्थान में रखा। फिर वीर्य को हम ने जमा हुआ खून बना दिया। फिर उस खून के लोथड़े को मांस का टुकड़ा कर दिया। फिर मांस के टुकड़े को हड्डियां बना दी फिर हड्डियों को हम ने मांस पहना दिया फिर दूसरी बनावट में उस को पैदा कर दिया। वह अल्लाह बरकतों वाला है जो सब से अच्छा पैदा करने वाला है।" (२३:१२-१४)

आदमी के पैदा किए जाने के स्टेज, जैसा कि वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित किये गये हैं यह है:

१. ओवम की उपज फैलोपियन ट्यूब में स्थान लेता है। उपजने वाली वस्तु पुरूष का वीर्य है।

२. उर्वरक अंडे का पैदा होना अलग स्थान पर महिला के अन्दर जन्म लेने वाले सिस्टम में विस्थापित होता है। यह गर्भाशय में उतरता है और गर्भाशय के शरीर में रहता है। जैसे ही गर्भ आंखों से दिखालाई देता है, वह एक छोटे मांस के लोथड़े के समान लगता है। यह प्रोग्रेसिव स्टेज में बढ़ता है, जो आज अच्छी तरह

जानी पहचानी बात है। यह हड्डी के आकार, पट्ठे, नाड़ी सिस्टम, रक्त संचार और पेट के अन्दरूनी भाग की बनावट है।[1]

नतीजे में, डा० बुकाई विश्वास से कहते है:

हमारे समय से हज़ारों वर्ष पूर्व, उस समय जब ग़लत और मनमौजी आस्थाऐं हावी थी, लोगों को कुरआन का ज्ञान था। बयान जो कि मौलिक महत्व की सत्यता का साधारण शब्द में बयान है जिसकी खोज में मनुष्य को शताब्दियां लग गई।[2]

● ● ●

[1] मैक्रोपेडिया, V. 18,P-1008

[2] Bacaile op. cit

मुहम्मद कौन हैं?

और हम ने आप को सारी दुनिया के लिए रहमत बनाकर भेजा है। (२१:१०७)

मुहम्मद अल्लाह के अंतिम संदेष्टा और पैग़म्बर हैं। उनका नाम मुहम्मद, अब्दुल्लाह का पुत्र, है। वह मक्का में ५७० ए डी० में पैदा हुए थे। पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी जवानी में सब से समाजिक ख़ूबियों से भरे थे। वह बड़ी बुद्धि और बेदाग़ चरित्र का नमुना थे। उनकी तेज़ बुद्धि, उच्च विचार और सही चीजों के चुनाव आदि से सही उद्देश्य को पाने के लिए उन की सहायता की गई थी। उन की लम्बी खामोशी उन को सच्चाई की खोज और उन के अपने चिन्तन-मनन की आदत में उनकी सहायता करती थी उनकी तेज बुद्धि और साफ स्वभाव व्यक्तिगत, और सामूहिक जीवन के मार्गो को समझने और अपनाने में सहायक थे वह अन्धविश्वास से कामों से अलग रहते परन्तु लाभदायक और निर्माण कार्यों में सक्रिय भूमिका निभाने, बेकार और विनाश के कार्यों में वह

स्वयं आप एकान्त से सहारा लेते। वह शराब पीने से, ऐसे माँस खाने से जिन्हें कुर्बानगाहों पर ज़ब्ह किया जाता था या देवी-देवताओं के मेले पर चढ़ाया जाता था, उन के खाने से दूर रहते थे।

उन्होंने बेदाग़ चरित्र से स्वयं को मानव के लिए एक नमूना साबित किया। वह अपने समय के लोगों के लिए बड़े लाभदायक थे वह अपने विचार में नेक और स्वभाव में शांत थे। वह सबसे अधिक नेक दिल, सादा और मेहमानों की इज़्ज़त करने वाले थे। और सदा लोगों को अपने परहेज़गारी और हंसमुख चेहरे से प्रभावित करते थे। वह संधि की रक्षा करने में सब से सच्चे और श्रेष्ठ थे। अपने अच्छे व्यक्तित्व के कारण लोगों में "अमीन" (अमानतदार) के नाम से जाने जाते थे।

लोगों पर इस के प्रभाव का निष्कर्ष हंस परम आनंद से लगाया जा सकता था जो उन के दिलों पर हावी होता और उनके मान प्रतिष्ठा से भर देता। लोगों का पैगम्बर के प्रति आदर, आदर युक्त भय और प्रेम अद्भूत और बेमिसाल था दुनिया में किसी दूसरे आदमी का इतना सम्मान और उससे प्रेम इस प्रकार नहीं किया गया। जो लोग उनको ठीक से जानते थे वे उनसे अति प्रभावित रहते थे। वे लोग आपके नाखून में भी चोट पहुँचने पर आप के लिए अपनी जानों को देने के लिए तैयार रहते थे। आप कई पहलूओं से मदद किए जाते थे कि जिसे आप के सिवा मंजूर नहीं किया जाता था, आप के साथियों ने आप को ऐसा ही बेमिसाल पाया और आप से प्रेम किया।

जब आप चालीस वर्ष की आयु में पैग़म्बर बनाऐ गए तो अल्लाह ने पहली कुरआनी आयत आप पर जिब्रील फ़रिश्ता के द्वारा उतारा, अल्लाह ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि आप लोगों तक अल्लाह के एक मात्र होने की बात पहुँचा दें और उन्हें शिर्क (बहुदेव पूजा) के विरूद्ध चेतावनी दे दें।

मक्का के मुशिरकों (बहुदेव पूजकों) ने आप का विरोध किया और आप के मानने वालों को कठोर सज़ाऐं दी, परन्तु उस चीज़ ने उनके ईमान को नहीं हिलाया नहीं उनके अटल विश्वास को छोड़ने का कारण बना। न ही लोगों को उन के प्रचार-प्रसार को जवाब देने से रोक सका। आखिर में जब मदीना के अधिकतर लोगों ने इस्लाम को गले लगा लिया तो मक्का के मुसलमान मदीना चले गए। बाद में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम स्वयं भी मदीना पलायन कर गए कि वहाँ इस्लामी राज्य की स्थापना करें। चन्द वर्षों के बाद मक्का के मुशिरकों और उनके साथियों ने मुसलमानों की बढ़ती शक्ति को मान लिया, और मक्का को बिना हिंसा के विजय (फ़त्ह) कर लिया गया। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लगभग तीस वर्ष मृत्यु के पश्चात इस्लाम पूरी दुनिया में फैल गया, और परशीयन व रोमन, उस समय के दो सब से बड़े साम्राज्य को बेदखल कर दिया गया।

कई एक पश्चिमी विद्वानों और प्रसिद्ध व्यक्तियों ने माना है कि पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चरित्र और व्यवहार में कोई

एक दोष या कमी नहीं थी। उन लोगों में से कुछ के विचार लिखने योग्य है। जार्ज बर्नाड शा ने लिखा:

"मेरा विश्वास है कि यदि उनके जैसा आदमी इस नई दुनिया का डिक्टेटर बन जाए तो वह दुनिया की समस्याओं का इस प्रकार निदान कर देगा जो ज़रूरी शक्ति और खुशहाली ला देगा। यूरोप मुहम्मद के अक़ीदे से महुब्बत करने की शुरुआत कर रहा है। अगली शताब्दी में इस बात को और अधिक मान्यता मिलेगी कि इस धार्मिक मत की, दुनिया की समस्याओं के निदान में क्या प्रसांगिता है।[1]

लैमैटरीन ने यह लिखते हुए मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्रशंसा की:

"अगर मकसद की बुलंदी, साधनों की कमी और आश्चर्यजनक नतीजा, मानव के ज़हीन, व्यक्ति होने की तीन कसौटियां हैं तो नये इतिहास में कौन है जो किसी महान आदमी की तुलना मुहम्मद से कर सकें?''[2]

हिन्दू नेता महात्मा गांधी ने पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में लिखा:

"मैं विश्वस्त हूँ कि यह तलवार नहीं थी जिस ने उन दिनों में इस्लाम के लिए एक स्थान जीता था। यह पूरी सादगी, और पैग़म्बर

---

1 A collection of writing of some of the Eminent Scholars, 1937

2 Historire de la Turquie, 1955

के पूरे तौर पर स्वयं के मिटाने की क्रिया, वादा के प्रति गम्भीर, उन का निडर होना, उन का ख़ुदा में और उनके अपने मिशन में मुकम्मल विश्वास, यही चीज़ें थीं, तलवार नहीं जो सभी बाधाओं को उन के सामने से ले गईं और वह सभी बाधाओं के पार कर गए।''[1]

● ● ●
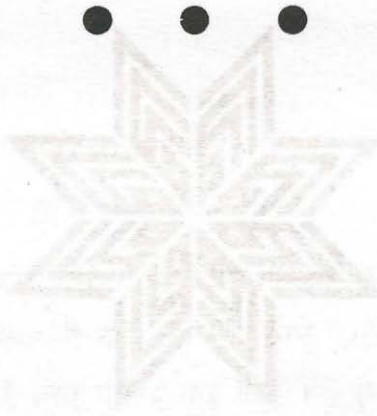
[1] Young India 1922.
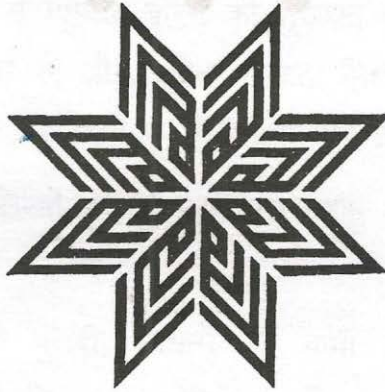
इस्लाम क्या है?

इस्लाम सभी पवित्र धर्मों में अंतिम है। विदाई हज के दौरान इसका यह नाम कुरआन के द्वारा दिया गया:

"आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारे धर्म को मुकम्मल कर दिया, और अपनी नेमत पूरी कर दी, और मैंने इस्लाम को एक धर्म के रूप में तुम्हारे लिए पसन्द कर लिया।" (५:३)

दुनिया के धर्मों में इस्लाम सब से अंतिम धर्म है। आज इस के मानने वालों की संख्या १.२५ बिलियन से अधिक है। दुनिया के प्रत्येक देश में कम से कम एक छोटा मुस्लिम अल्पसंख्यक है। इस्लाम ने दिखा दिया है कि दुनिया में सब से अधिक फैला हुआ धर्म है, बल्कि सब से अधिक प्रगितशील है, जो पिछली कई शताब्दियों की तुलना में लोगों के इसे स्वीकारने हेतु आकर्षित कर रहा है।

अरबी शब्द "इस्लाम" का अर्थ आज्ञा का पालन करना है, जो एक मूल धार्मिक धारण या मत की ओर संकेत करता है जिसे एक मुसलमान अल्लाह की मर्ज़ी के लिए उसके कानून को अंदरूनी और

बाहरी तौर पर अपने को अनुकूल बनाकर उसकी आज्ञा का पालन करता है। इस्लाम कोई तंग अर्धम में धर्म नहीं है जैसा कि इसका प्रयोग सेकुलर लोगों द्वारा पश्चिम में, किया जाता है, बल्कि यह तो विश्वव्यापी है और सदैव रहने वाला धर्म है जो प्रत्येक क़ौम के पैगम्बरों द्वारा लोगों को तब से बताया गया जब से आदमी के वंश की शुरूआत हुई। इस्लाम ऐसे तौहीद (एकेश्वरवाद) पर ज़ोर देता है जिस में कोई समझौता नहीं है और इसके धर्मिक और इबादत के तरीक़ों पर मज़बूती से जमे रहने पर ज़ोर देता है। यह अल्लाह के मर्ज़ी के अनुसार कार्य करने का हुक्म देता है और सब से अन्तिम पैग़म्बर और संदेष्टा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन को जहाँ तक सम्भव हो उसे अपनाने के लिए आदर्श और नमूना बनाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति से कहता है।

अल्लाह ने दुनिया को और जो कुछ इस में है सब को पैदा किया ताकि उसे एक और मात्र एक पूज्य के रूप में माना जाए। उसने इंसान और जिन्न को केवल अपनी इबादत के लिए पैदा किया। अल्लाह तआला कहता है:

> "मैंने जिन्न और इंसान के केवल अपनी इबादत के लिए पैदा किया।" (५१:५६)

इसका तरीका और इबादत का रूप आदमी की अपनी मन मर्ज़ी पर नहीं छोड़ दिया गया है। अल्लाह तआला एक है जो इबादत के सभी काम का आदेश देता है और ये कि उसे कैसे किया जाए। चूंकि

इस्लाम जीवन के हर पहलू की अगुवाई और मार्गदर्शन करता है, चाहे वह रूहानी हो या शारीरिक, इसका न्याय क़ानून और अक़ीदा और इबादत पर आधारित है और ऐसे निर्देशों पर जो सामजिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवहार पर आधारित हैं।

चूंकि इस्लाम ज़िन्दगी बिताने का मुकम्मल रास्ता है, यह अच्छे चरित्र के अपनाने का आदेश देता है। अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा:

"वास्तव में मैं अच्छे चरित्र को पूरा करने के लिए भेजा गया हूँ।''

अल्लाह तआला ने अपने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदर्श चरित्र की यह कहते हुए तारीफ की:

"और वास्तव में आप उच्च कोटि के चरित्र वाले हैं।'' (६८:४)

आयेशा रज़ि अल्लाहु अन्हा अल्लाह के पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नी से आप के चरित्र के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा:

"आप के चरित्र का नाम कुरआन था।''

आयेशा रज़ि अल्लाहु अन्हा के कहने का अर्थ यह था कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस के अनुशासन के नियमों, हलाल और हराम और इसकी सभी अच्छी, सुन्दर और शानदार शिक्षाओं पर मज़बूती से अमल किया। इसी कारण से अल्लाह मोमिनों को

आदेश देता है कि वे उसके पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदर्श जीवन की पैरवी करें:

"तुम्हारे लिए वास्तव में अल्लाह के पैग़म्बर में शानदार नमूना है।" (३३:२१)

इस्लाम हर अवसर पर अच्छे चरित्र का अच्छे ढंग से प्रस्तुत करने को आदेश देता है। अर्थात सलाम करते, बैठते, खाते, पढ़ते-पढ़ाते, खेलते, यात्रा करते, कपड़ा पहनते, भेंट करते, सोते, लोगों का सत्कार करते, विशेष रूप से रिश्तेदारों और पड़ोसियों के साथ अच्छा व्यवहार करने आदि का आदेश देता है।

सभी अच्छे व्यवहार की संहिता कुरआन में और अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस में मौजूद हैं।

इस्लाम में परिवार का उच्च स्थान है। यह समाज का केन्द्र है, क्योंकि स्वस्थ परिवार का अर्थ स्वस्थ समाज होता है। इसीलिए अल्लाह तआला आदेश देता है कि माता-पिता के साथ नरमी और अच्छा व्यवहार किया जाए।

"और तुम्हारा मालिक आदेश दे चुका है कि तुम उसके अतिरिक्त किसी और की इबादत न करना और माता-पिता के सथ अच्छा व्यवहार करना। यदि तेरी मौजूदगी में उनमें से एक या दोनों बुढ़ापे को पहुँच जाऐं तो उनके आगे उफ़्फ तक न कहना, न उन्हें डांट-डपट करना बल्कि उन के साथ आदर से बात करना। और नरमी और प्रेम के साथ उनके

सामने विनीत रहना और दुआ करते रहना कि ऐ मेरे मालिक उन पर वैसा ही कृपा कर जैसा उन्होंने मेरे बचपन में मेरी परवरिश की है।'' (१७:२३, २४)

परिवार के बाद रिश्तेदारों की बात आती है। अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा कि अल्लाह तआला ने उस से अपनी दया एवं कृपा का वादा किया है जो अपने सगे सम्बंधियों और रिश्तेदारों से अच्छा व्यवहार करता है, और उस से अल्लाह अपनी दया एवं कृपा अलग रखता है जो अपने रिश्तेदारों के साथ कठोर व्यवहार करता है।

● ● ●
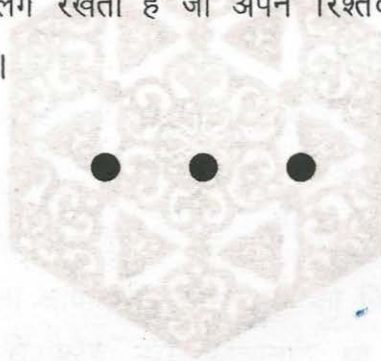
इस्लाम के स्तम्भ

ईमान के दर्जे

हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु बयान करते हैं:

एक दिन जब कि हम लोग अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ बैठे थे कि एक आदमी काले बाल और सफ़ेद लिबास वाला आया। उस पर यात्रा की निशानी नहीं थी, न ही हम में से कोई उसे पहचानता था। वह पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने बैठ गया इस प्रकार कि उस के घुटने पैग़म्बर के घुटने से छू रहे थे। उस ने अपने हाथ पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जांघ पर रख दिया और कहा, "मुहम्मद! आप हमें बताऐं कि इस्लाम क्या है?" पैग़म्बर ने फ़रमाया, "इस्लाम यह है कि इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवा सच्चा पूज्य कोई नहीं है, और ये कि मुहम्मद अल्लाह के पैग़म्बर हैं, नमाज़ पढ़ना, ज़कात देना (अनिवार्य दान करना), रमज़ान के महीने के रोज़े रखना,

और यदि आप शक्ति रखते हैं तो हज्ज करना।'' उस आदमी ने कहा, "आप ने सच कहा।'' (हज़रत उमर ने कहा, "हम लोग बहुत हैरान थे कि वह खुद ही प्रश्न करते हैं और खुद ही आप के उत्तर को सही कहते हैं।) उस आदमी ने आगे प्रश्न किया, "आप हमें बतायें ईमान क्या है?'' पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा, "ईमान यह है कि अल्लाह, और उस के फ़रिश्तों, उसकी किताबों, उसके पैग़म्बरों पर यक़ीन रखना, और ये कि क़यामत के दिन पर और क़ज़ा (पूर्व में किया गया पाक निर्णय) और उस के अच्छे-बुरे परिणामों पर विश्वास रखना।'' "आप ने सच कहा।'' उस ने कहा। फिर उस ने पूछा, "मुझे बतायें कि एहसान क्या है?'' आप ने फ़रमाया, "वह यह है कि आप अल्लाह की इस तरह इबादत करें कि जैसे आप उसे देख रहे हैं। यदि आप उसे नहीं देख सकते, तो वह आप को देख रहा है।'' उस ने कहा, "आप हमें बताऐं आख़िरी घड़ी (क़यामत) कब है?'' पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा, "वह आदमी जिस से प्रश्न किया गया है प्रश्न करने वाले से अधिक नहीं जानता है।'' उसने कहा, "तब आप हमें उसकी निशानियों के बारे में बताऐं।'' पैग़म्बर ने फ़रमाया, "जब एक लौन्डी अपनी मालकिन को जन्म दे, और जब तुम देखो कि ग़रीब नंगे चरवाहे ऊँची इमारतें खड़ी करने में एक-दूसरे से मुक़ाबला करने लगे।'' फिर वह आदमी चला गया। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम थोड़ी देर सोचते रहे और फिर पूछा, "उमर,

क्या तुम जानते हो कि प्रश्न करने वाला कौन था,'' मैंने कहा, "अल्लाह और उसके पैग़म्बर अधिक जानते हैं।'' आप ने फ़रमाया, "वह जिब्रील थे। वह तुम लोगों को तुम्हारा धर्म सिखाने आए थे।'' (बुखारी, मुस्लिम)

अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इस्लाम का भवन पांच खम्बों पर खड़ा है:

१. ईमान की गवही देना (शहादत)
२. नमाज़ (सलात)
३. ग़रीबों का कर्ज़ या अनिवार्य दान (ज़कात)
४. रोज़ा (सौम)
५. तीर्थ यात्रा (हज)

ईमान की गवाही (शहादत)

ईमान की गवाही, अरबी में जिसे शहादत कहते हैं, हर उस आदमी के लिए कहना अनिवार्य है जो इस्लाम को स्वीकारता है। यह है "ला इलाह इल्लल्लाह, मुहम्मर्दुरसूलुल्लाह'' अर्थ है, अल्लाह के अलावा इबादत के लायक कोई नहीं है, और मुहम्मद अल्लाह के पैग़म्बर हैं।'' इसका अर्थ है कि इबादत के योग्य अल्लाह के सिवा कोई नहीं है, और यह कि उसकी केवल उसके संदेष्टा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षा के अनुसार ही इबादत की जा सकती है।

नमाज़ (सलात)

अरबी भाषा के शब्द सलात का शाब्दिक अर्थ विनम्र दुआ है, परन्तु धार्मिक तौर पर झुकने की एक क्रिया और नियमित शारीरिक रूटीन

पोज़ीशन है जिस में कुरआन की आयतों को पढ़ना और निश्चित मुनासिब दुआ और विनम्र प्रार्थना का नाम है। यह आदमी और अल्लाह तआला उसके मालिक के बीच सम्बंध का साधन है। इस में, एक व्यक्ति अल्लाह से अपनी मुहब्बत और आज्ञाकारी होने का प्रदर्शन करता है। ईमान की गवाही के तुरन्त बाद यह सब से महत्वपूर्ण स्तम्भ है और इस्लाम का रीढ़ है। यह इबादत का काम है खड़े होने, झुकने, रुकू करने और बैठने की स्थित है जिस में उच्चारित शब्द कहना है जैसे तकबीर, अल्लाहु अकबर कहना (अल्लाह सब से बड़ा है!), तसलीम, अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातुहू कहना (अल्लाह की दया और कृपा आप पर हो!)

यह मोमिन के लिए रौशनी, गुनाहों से हिफ़ाजत और पिछले किए गुनाहों का प्रायश्चित है।

नमाज़ का महत्व

सलात धार्मिक प्रार्थना, सभी वयस्क मुसलमानों पर अनिवार्य है, और बच्चों को सात वर्ष की आयु से सिखाया जाना चाहिये। उन को छोटी आयु से इन्हें शुरू करने के लिए आदत डालनी चाहिए और दस वर्ष की आयु से उन्हें नमाज़ के लिए कहा जाना चाहिए।

नमाज़ को उसके अपने समय से बिना किसी ज़ायज़ कारण के देर करना सख़्त मना है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"कोई मुसलमान जो वुजू (अरबी शब्द वुजू का अर्थ है धार्मिक तरीका के अनुसार शरीर के विशेष अंगों को धोना) के बाद एक फ़र्ज़ नमाज़ अदा करता है, तो झुकना और रुकू करना

उसके पूर्व के सभी पापों को मिटा देगा जब तक कि वह बड़े पापों से दूर रहेगा। यह उस के पूरे जीवन तक है।''

सलात (नमाज़) को एक अनिवार्य इबादत के काम की हैसियत से इन्कार करना इस्लाम से गुमराह कर देता है, जब कि इसे नज़रअंदाज़ करना धर्म का इंकार करना है। सलात तब फ़र्ज़ किया गया जब कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सातवें आकाश पर एक चमत्कारिक यात्रा पर गए थे।

यह सब से पहली चीज़ होगी जिस के बारे में आदमी से क़यामत के दिन पूछा जाएगा।

सलात केवल फ़र्ज़ ही नहीं है, बल्कि इसे हर एक दिन एक ख़ास समय पर अदा किया जाना चाहिए। नीचे लिखी गई दैनिक पांच फ़र्ज़ नमाज़ें हैं:

१. सुबह की नमाज़ (सलातुल-फज्र): इस में दो फ़र्ज़ रकआत हैं। दो ऐच्छिक रकआत (यूनिट, सुन्नत) फ़र्ज़ नमाज़ से पहले है। इस नमाज़ की मुद्दत सुबह होने से लेकर सूर्य निकलने तक है।

२. दोपहर की नमाज़ (सलातुज़-जुहर): इस में चार फ़र्ज़ रकआत हैं। इस में पहले चार ऐच्छिक यूनिट (दो ग्रुप में दो-दो करके) है और फिर अंत में दो रकआत सुन्नत है। यह तब अदा की जाती है जब सूर्य अपनी पराकार्षण से ढल जाता है और दोपहर बाद के दूसरे हाफ़ तक अदा की जाती है, जिसे अरबी में 'अस्र' कहते हैं।

३. दोपहर बाद की नमाज़ (सलातुल-अस्र): यह नमाज़ चार फ़र्ज़ रकआत की है और तब अदा की जाती है जब लम्बी छड़ी की छांव छड़ी की लम्बाई के समान हो जाती है। इस नमाज़ का समय सूर्य डूबने से थोड़ी देर पहले तक रहता है। एक आदमी चार फ़र्ज़ यूनिट से पूर्व चार ऐच्छिक यूनिट पढ़ सकता है।

४. संध्या की नमाज़ (सलातुल-मग़रिब): इस में तीन फ़र्ज या अनिवार्य यूनिट है, और इस के बाद दो ऐच्छिक यूनिट हैं। संध्या की नमाज़ सूर्य डूबने के तुरन्त बाद से संध्याकाल के समाप्त होने तक है।

५. रात की नमाज़ (सलातुल-इशा) : दैनिक पांच वक़्त की नमाज़ों में सब से अंतिम इस नमाज़ में चार ज़रूरी यूनिट हैं। इस में फ़र्ज़ चार रकआत से पहले और बाद में दो-दो ऐच्छिक रकआत नमाज़ें फिर तीन या एक रकआत की ऐच्छिक (वित्र) नमाज़ है। पूरे तौर अंधेरा होने के बाद से सुबह के फटने तक इस नमाज़ के अदा करने का वक़्त है, परन्तु आधी रात से पहले तक अदा कर लेना बेहतर और पसंदीदा है।

अनिवार्य अर्थात फ़र्ज़ नमाज़ें अकेले या अधिक पसंदीदा तौर पर सामूहिक रूप से एक जमाअत में एक लीडर (इमाम) की अगुआई में अदा किया जाय। हर नमाज़ के समय शुरू होने पर नमाज़ के लिए बुलाना (अज़ान) है।

नमाज़ अदा करते समय, आदमी को धार्मिक तौर पर पाक होना ज़रूरी है जो (वुजू) के द्वारा प्राप्त किया जाएगा। वुजू में हाथ धोना, नाक और मुंह को पानी से साफ़ करना, चेहरा और बांहों को धोना, सिर को भीगे हाथों पोंछना और पैरों को धोना है।

नमाज़ इस्लाम के बुनियादी स्तम्भों में से एक है। यह इबादत का पहला काम है जिस के लिए आदमी क़यामत के दिन जवाबदेह है। यदि अल्लाह तआला व्यक्तिगत नमाज़ को स्वीकार कर लेता है, तो वह दूसरे अच्छे कामों को स्वीकार कर लेता है।[1]

ग़रीब का हक़ या ज़रूरी दान (ज़कात)

ज़कात, सादे तौर पर गरीबों का हक़ या कर्ज़ इस्लाम का तीसरा स्तम्भ है। यह वित्तीय संस्था इस बात पर आधारित है कि अल्लाह तआला सभी चीज़ों का मालिक है। इसी प्रकार उसको मालिकाना हक़ भी बताने का अधिकार है, और ये कि दौलत के प्राप्त करने और उस के ख़र्च करने के रास्ता को बतलाने का भी अधिकार है। ज़कात का आरम्भिक तौर पर अर्थ शुद्धिकरण, पाक-साफ करना, बढ़ाना और वृद्धि करना है, और यही इस के आद करने का उद्देश्य है।

यह हक़ देय है खास क़िस्म की संपत्तियों पर और विशेष वर्ग के ग़रीब मुसलमानों को देना है, जैसा कि इस कुरआनी हुक्म में है:

"बेशक दान (यहां ज़कात की ओर इशारा है) ग़रीबों, फ़कीरों, वे लोग जो इसे जमा करने के लिए काम पर रखे गए हैं, और वे लोग जिन के इस्लाम स्वीकारने की पूरी आशा है, गुलामों को आज़ाद करने, कर्ज़दारों, अल्लाह के रास्ते में, बेसहारा

---

[1] आदमी से उस के एक-एक मिनट का हिसाब होगा, और वह खुद अल्लाह के सामने क़यामत के दिन उस के प्रश्नों का उत्तर देने के लिए खड़ा होगा। हर आदमी अपने काम के प्रति जवाबदेह है। आदमी की ज़िन्दगी क़यामत में या तो सदा के लिए आराम या सदा के लिए मुसीबतों में होगी।

मुसाफ़िर के लिए है, अल्लाह की ओर से फ़र्ज़ है, और अल्लाह सब कुछ जानने वाला और पूरा बुद्धिमान है।'' (९:६०)

ज़कात अदा करना कंजूसी और बख़ीलीपन से और लालच से पाक-साफ़ करता है। साथ ही यह समाजिक कल्याण के तरीके बढ़ावा देता है जिस से कि भाईचारा, प्रेम, दोस्ती और मुसलमानों के बीच सहयोग को बढ़ावा मिलता है। यह दया और मेहरबानी के आधार पर ग़रीबों और अमीरों के बीच की दूरी में पुल का काम करता है। उस के अलावा अल्लाह तआला इसका बदला दिल खोल कर देता है। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"जो ज़कात देता है, अपनी संपत्ति के दोषों को वह दूर करता है।''

ज़कात मुसलमानों की सभी संपत्ति पर देय है, चाहे वह मुसलमान बूढ़ा हो या जवान, मर्द हो या औरत, समझदार हो या पागल। यह नीचे बयान की गई संपत्तियों पर देय है:

१. सोना, चाँदी और रुपया

२. पशुधन

३. पैदावार

४. व्यापारिक सामान और धन

५. जमा किए गए और खान से निकाले गए धन

यदि अपनी संपत्ति की एक आदमी ज़कात अदा करने से पहले मर जाता है तब उस मर गए व्यक्ति के धन से उसे उसके वारिसों में बांटने से पहले ले लिया जाएगा।

ज़कात का इंकार या इस्लाम के किसी दूसरे स्तम्भ का इंकार करने वाला मुर्तद हो जाता है। अल्लाह ने उन लोगों को जो ज़कात को देने से रोकते हैं उस के लिए कठोर दण्ड का वादा कर रखा है।

रोज़ा (सौम)

सौम, रमज़ान के महीने का रोज़ा, इस्लाम का चौथा खम्भा है, जिसे अल्लाह तआला ने हिजरत[1] के दूसरे वर्ष रखने का आदेश दिया।

रमज़ान के रोज़े रखना हर एक समझदार, व्यस्क मुसलमान पर ज़रूरी है। इस में पूरे दिन रोज़े की हालत में खाने और पीने से रुकना है, जिस का समय सुबह होने से लेकर सूर्य के डूबने तक है। रोज़ा सहन करने, बरदाशत करने, खुद को बचाने और अल्लाह के डर को बढ़ावा देने में मदद करता है। साथ ही यह ग़रीब मुसलमानों के साथ हमदर्दी पर ज़ोर देता और दान करने के मिज़ाज को बढ़ावा देता है। रमज़ान के महीने के दौरान जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं, और जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिए जाते हैं। रमज़ान में, एक ऐसी रात है जो हज़ार महीनों की इबादत से बेहतर है।

रोज़ा तब शुरू होता है जब रमज़ान का नया चाँद दिखाई देता है और जब समाप्त हो जाता है जब उस के बाद शौव्वाल माह का नया चाँद दिखाई देता है। इस के समाप्त होने की निशानी ईदुल-फित्र है, जिस का शब्दिक अर्थ रोज़ा खोलने की ईद। यदि कोई आदमी एक दिन का या एक से अधिक दिन का रोज़ा किसी जायज़ कारण से

---

[1] वह वर्ष जब पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीना पलायन किया।

नहीं रख सका तो वह रमज़ान समाप्त होने के बाद उसे पूरा करेगा।

नीचे लिखी चीज़ें रोज़े को ख़राब कर देती है:

१- रोज़े की हालत में जान बूझकर खाना, पीना तथा यौन संबंध स्थापित करना

२- मासिक धर्म का आना

३- जान बूझ कर कैय करना

४-खून का निकालना (खून देना)

ऊपर लिखी गई बातों में से किसी एक का भूल से करना रोज़ा को खराब नहीं करता है।

तीर्थयात्रा (हज्ज)

हज्ज इस्लाम का पांचवाँ स्तम्भ है, यह ख़ास धार्मिक रीतियों का मक्का के ख़ास स्थानों पर चाँद के महीने जुलहिज्जा में करने का नाम है। 'हज्ज, जीवन में प्रत्येक व्यस्क समझदार ऐसे मुसलमानों पर ज़रूरी है जो शारीरिक और आर्थिक रूप से इसे अदा करने के लायक हों अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

> "जो हज्ज करता है, बिना उसे यौन गतिविधि या नाफ़रमानी से भंग किए, तो वह गुनाहों से ऐसे पाक होता है जैसा कि वह (बच्चा जो) उस दिन जन्म लिया हो।''

दूसरी इबादत के समान, हज्ज करते समय भी इस के करने का इरादा करना है। इस में पाक काम के लिए एक ख़ास कपड़ा इहराम[1] पहनना है। वास्तव में इस प्रकार के कपड़े पहनना हज्ज या उमरा[2] के करने का इज़हार है। (उमरा यानी छोटा हज्ज)।

---

[1] इहराम एक ख़ास हालत में प्रवेश करने का नाम है जिस में हज्ज या उमरा (छोटा हज्ज) के करने का इरादा होता है। एक आदमी के लिए इस में एक टुकड़ा बिना सिलाए कपड़े को नाभि के ऊपर से घुटना के नीचे तक अपने बदन के ऊपर लपेट लेना है। दूसरा टुकड़ा सिर को छोड़ कर अपने बदन के ऊपर के भाग को लपेटना है। उस के लिए जूता या मोज़ा या सिले हुए कपड़े पहनना नाजायज़ है। चप्पल या इस जैसी दूसरी अन्य चीज़ों की अनुमति है। साथ ही इस में पत्नी के साथ यौन संबंध स्थापित करना, शिकार करना या इस जैसी और चीज़ करना मना है। आम हालत में, एक बार जब मुसलमान इहराम बांध लेता है तो उसे हज्ज और उमरा के पूरा करने से पहले नहीं खोलना चाहिए परन्तु यदि कोई हज्ज या उमरा को स्वास्थ कारण से, दुश्मन के डर से, या किसी बड़े ख़तरे के कारण पूरा नहीं कर सके तो वह अपना इहराम खोल देगा और एक भेड़, एक बकरी, गाय या एक ऊँट को फ़िदिया के तौर पर क़ुर्बान करेगा।

[2] उमरा हिन्दी में जिसे प्राय: छोटा हज्ज कह सकते है, साल में किसी भी दिन तीर्थ (ज़ियारत) करने का नाम है। इस की सभी रीतियां मक्का के पवित्र मस्जिद के पास ही पूरी की जाती हैं। आम तौर पर उमरा हज्ज का एक भाग भी है। उमरा में काबा के सात चक्कर लगाना है और फिर उस के बाद दो यूनिट (रकआत) नमाज़ पढ़ना, ज़मज़म कुंऐ का पानी पीना, सफ़ा और मरवा के पहाड़ों पर सात बार दौड़ लगाना है और अन्त में बाल कटाना या छोटा कराना है।

एक बार जब एक व्यक्ति इहराम की हालत में हो जाता है, जिस में एक कपड़ा बदन के ऊपरी भाग को और दूसरे कपड़े से बदन को नाभि के नीचे से लपेटना होता है, तब नीचे दी गई चीज़ें उस समय तक प्रतिबंधित और मना हो जाती हैं जब तक हज या उमरा समाप्त न हो जाए :

१. बदन के किसी भाग के बाल उखाड़ना या काटना

२. हाथ या पांव के नाख़ून काटना

३. टोपी या सिर ढकने वाली किसी दूसरी चीज़ से सिर ढाकना

४. खुश्बू लगाना

५. शादी करना, और

६. यौन संबंध स्थापित करना।

हज्ज काबा के सात चक्कर लगाने से शुरू होता है और सफ़ा और मरवा की पहाड़ियों पर दौड़ लगाने तक जारी रहता है। ८ जुलहिज्जा को तीर्थयात्री (हाजी) मिना की ओर जाते हैं, फिर अरफ़ात, फिर मुज़दलिफ़ा, फिर मिना वापस आते हैं ताकि दूसरे कार्यों को पूरा करें और इस काम को एक जानवर, चाहे एक भेड़, एक बकरी, एक गाय या एक ऊँट कुर्बानी कर के समाप्त करें।

● ● ●

ईमान के अरकान

ईमान के छः अरकान हैं:

१. अल्लाह पर ईमान

२. उस के फ़रिश्तों पर ईमान

३. उस की किताबों पर ईमान

४. उस के संदेष्टाओं पर ईमान

५. क़यामत (अंतिम दिन) पर ईमान और

६. पवित्र फ़ैसला और पहले से दे दिया गया फ़ैसला (क़ज़ा और क़द्र) पर ईमान

अल्लाह तआला पर ईमान

इस का मतलब इस बात पर ईमान (विश्वास) है कि सिर्फ़ अल्लाह तआला ही एक है, जिसकी इबादत ठीक है, और वही सभी चीज़ों का पैदा करने वाला और रोज़ी देने वाला है, वही है जो ज़िंदगी और

मौत देता है, और यह कि वह अपने नामों और खूबियों में बेमिसाल है।

फ़रिश्तों पर ईमान

अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को नूर (प्रकाश) से पैदा किया है। वे सब अल्लाह के आदर के लायक बन्दे हैं, जो उस की आज्ञा का पालन करते और उस के आदेशों को पूरा करते हैं। अल्लाह उन के संबंध में बताता है :

> "जो कुछ भी वह उन (फ़रिश्तों) को आदेश देता है वे कभी उस की नाफ़रमानी (अवज्ञा) नहीं करते हैं, और उन्हें जैसा कहा जाता है वैसा करते हैं।" (६६:६)

अल्लाह तआला ने उन्हें अपनी इबादत के लिए पैदा किया, और केवल अल्लाह तआला ही जानता है कि वे सब कितने हैं। उन में से कुछ खास यह हैं :

- जिब्रील जिनका काम अल्लाह तआला के संदेष्टाओं और पैग़म्बरों के पास वह्य ले जाना है।
- मीकाईल जो वर्षा लाता है।
- मौत का फ़रिश्ता मानव की जान लेना जिस का काम है।
- अल्लाह के सिंहासन को उठाने वाले।
- जन्नत और जहन्नम की देख भाल करने वाले।

इन के अतिरिक्त भी फ़रिश्ते हैं जो आदमी की देख भाल करते हैं, दूसरे वे हैं जो लोगों के कामों और उन की बातों को रिकार्ड करते हैं और फिर उस के अलावा भी हैं जो अन्य दूसरे कामों में लगे हैं।

किताबों पर ईमान

अल्लाह की किताबों पर ईमान लाना यह है कि उस पर पूरा विश्वास रखना कि अल्लाह ने इन किताबों को अपने संदेष्टाओं पर प्रकट (वह्यी) किया ताकि वे इन को लोगों तक पहुँचा दें। यह किताबें अल्लाह तआला की बातों पर शामिल हैं वे किताबें बेशक वह्यी के समय शुद्ध थीं, और जब कभी एक धार्मिक पुस्तक उतारा गया, उस ने पूर्व (की किताब) को समाप्त कर दिया।

मालूम धार्मिक पुस्तकें यह हैं :

१- तौरैत, वह किताब जो अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम पर उतारी।

२- ज़बूर, वह किताब जो दाऊद अलैहिस्सलाम पर उतारी गयी।

३- इंजील, जो ईसा अलैहिस्सलाम पर उतारी गयी।

आज यहूदियों और इसाईयों के हाथों में जो किताबें हैं, वह तौरैत और बाईबल (इंजील) पुराने और नए पुस्तक विश्वासनीय इस लिए नहीं है कि इस में रद्दो बदल कर दिया गया है। उस के अलावा यह किताबें अल्लाह की किताब कुरआन के प्रकट होने के बाद समाप्त (मंसूख़) हो गईं।

कुरआन, अल्लाह का शब्द है, मानव के लिए उस की अंतिम किताब है, जिसे अल्लाह तआला ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने अंतिम पैगम्बर और संदेष्टा पर उतारी जिन्हें सभी मानव की ओर भेजा गया। अल्लाह तआला ने इसे सभी बातों को खोल-खोल कर बताने और सच्चे रास्ते को दिखाने के साधन और दया के लिए उतारा। अल्लाह तआला ने किसी भी तरह के रद्दोबदल से इस की सुरक्षा का वादा किया है। वह कहता है :

> "बेशक हम ही हैं जिस ने कुरआन को उतारा है और यक़ीनी तौर पर हम ही इस की रक्षा करेंगे।'' (१५:९)

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर कुरआन तेईस वर्ष की मुद्दत में हालात के अनुसार थोड़ा थोड़ा उतारा गया था, तेईस वर्षों में से तेरह मक्का में और दस मदीना में गुज़रा। यह ११४ चैप्टर (सूरह) में बंटा है जो अलग लम्बाई के हैं। (कोई लम्बी और कोई छोटी सूरह है।)

संदेष्टाओं पर ईमान

मुसलमानों का विश्वास है कि अल्लाह तआला ने हर एक राष्ट्र और कौम की ओर अपने संदेष्टाओं को भेजा जो उन लोगों को मात्र एक उसी की ईबादत (पूजा) करने की दावत देते थे। इस ईमान का अर्थ यह भी है कि अल्लाह के बजाय या अल्लाह के अलावा जिन देवी-देवताओं की पूजा की जाती है सभी का इंकार करना, और यह कि सभी संदेष्टा सच्चे थे और उन्हों ने अपने कर्तव्य का अच्छे ढंग

से पालन किया। अल्लाह तआला ने बहुत से संदेष्टाओं को भेजा, और केवल अल्लाह तआला ही जानता है कि वह कितने थे। यह सभी मुसलमानों के लिए ज़रूरी है कि वे सभी पैग़म्बर और संदेष्टा पर ईमान लाऐं। जो कोई इन में से किसी एक का इंकार करता है वह सभी का इंकार करता है। पहला पैग़म्बर जो अल्लाह ने इंसानों के पास भेजा वह नूह अलैहिस्सलाम थे, और सब से अंतिम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम थे। अल्लाह तआला कहता है :

"और हम ने पैग़म्बर को सभी समुदायों के पास यह बात पहुँचा देने के लिए भेजा कि अल्लाह ही की इबादत करो और तागूत[1] से बचो।'' (१६:३६)

सभी पैगम्बर और संदेष्टा इंसान थे। अल्लाह तआला ने उन को पैग़म्बर और संदेष्टा के रूप में औरों से अलग किया और उन का चमत्कार के साथ समर्थन किया। उन के पास अपनी कोई दैवी खूबी नहीं थी और न ही अनदेखी दुनिया का इल्म उन के पास था। परन्तु अल्लाह तआला ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सभी मानव की ओर भेजा यह कहते हुए कि :

"कह दीजिए (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम:) ऐ इंसानो, मैं तुम सब की ओर अल्लाह का संदेष्टा हूँ।'' (७:१५८)

---

1 अल्लाह के अलावा या उसके बजाय जिस की पूजा या इबादत की जाये, वह सभी तागूत कहलाता है।

सभी संदेष्टाओं में पांच ऐसे हैं जो सब से अधिक निरन्तर प्रयास करने वाले और ठोस इरादे वाले थे उस काम को करने में जो अल्लाह तआला ने उन को आदेश दिया था। वह नूह, इब्राहीम, मूसा, ईसा (अलैहिमुस्सलाम) और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम थे, जो उन सभी में सब से अंतिम और सब से अच्छे थे और बाक़ी सभी मानव में सब से अच्छे हैं।

क़यामत पर ईमान

मौत और उस से संबंधित विषय में मुसलमान अल्लाह तआला और उस के संदेष्टा की बातों की सच्चाई पर पूरा विश्वास रखते हैं। अल्लाह ने अपनी मख़लूक़ (जिस को पैदा किया) बेकार नहीं पैदा किया। उस ने आदमी और जिन्न को अपनी इबादत के लिए पैदा किया और उन के लिए पुरस्कार स्वरूप जन्नत का वादा किया है जो उस की और उस के संदेष्टा की आज्ञा का पालन करते हैं, और उन के लिए जहन्नम की आग है जो अल्लाह और उस के संदेष्टा की आज्ञा का पालन नहीं करते हैं। उसने पूरे संसार के लिए एक ख़ास मुद्दत रख दिया है, जिस की समाप्ति क़यामत की घड़ी होगी। क़यामत के दिन लोगों से उन के इस दुनिया में किए गए कामों के बारे में सवाल होगा। उनके कामों को तौला जाएगा। जिन के अच्छे काम बुरे कामों से अधिक वज़नी होंगे वह खुशहाल होगा। जिनके बुरे काम उनके अच्छे काम से अधिक होंगे उनके लिए जहन्नम की आग होगी। किसी भी अच्छे काम की कुबूलियत के लिए इस्लाम सब से पहली शर्त है।

क़यामत की छोटी और बड़ी निशानियां हैं। लगभग सभी छोटी निशानियां ज़ाहिर हो चुकी हैं। उन में पैग़म्बर मुहम्मद के धर्म का प्रचार, वक्त का तेजी से बदलना और चरवाहों का उँचे भवनों के बनाने में मुकाबला करना, और शराब खुलेआम पीना और अविवाहित स्त्री या पुरुष से यौन संबंध करना और दूसरी कई चीज़ें हैं जो क़यामत की निशानियों में से हैं।

बड़ी निशानियों में दज्जाल का ज़ाहिर होना है, ऐसा धोखेबाज़ जो खुदा होने का दावा करेगा। वह पूरी धरती की सैर करेगा लेकिन मक्का और मदीना में प्रवेश नहीं कर सकेगा। ईसा अलैहिस्सलाम का आसमान से उतरना दूसंरी बड़ी निशानी होगी। वह दज्जाल को जान से मारेंगे, सूअर का सफ़ाया कर देंगे और दूसरे काम करेंगें। वह एक ख़ास मुद्दत तक जिंदा रहेंगे और मुसलमान उनकी जनाज़ा की नमाज़ पढ़ेंगे। और उनको दफ़नाएंगे। एक तीसरी निशानी याजूज और माजूज का निकलना है, यह दो ऐसे लोग होंगे जो धरती का विनाश करेंगे, जिन को अल्लाह अंत में मौत दे देगा।

अंतिम बड़ी निशानी सभी जीव जन्तु के समाप्त होने का इशारा होगा और सूर्य पश्चिम से निकलेगा पहली बार सूर का फूंका जाना सभी चीज़ के ख़त्म होने का संकेत होगा। सभी लोग दूसरी बार सूर फूंके जाने के साथ ही उठाए जाएँगे और हिसाब-किताब के लिए इकट्ठा होंगे। जब लोग इसके लिए खड़े होंगे वह दिन ५०,००० साल के बराबर होगा। लोग नंगे होंगे, जैसे कि वह दिन जब उसने जन्म

लिया था। नतीजा के तौर पर वे लोग बड़ी कठिनाई में होंगे और अपने बुरे काम के अनुसार पसीने में डूबे होंगे। कुछ लोग अपनी पिंडली, कुछ घुटने, कुछ लोग अपनी छातियों और कुछ अपने मुंह तक डूबे होंगे। कोई भी पैग़म्बर अपने लोगों की सहायता करने के योग्य नहीं होगा। परंतु लोग मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रार्थना या सिफारिश के लिए कहेंगे उस समय जबकि वे लोग बड़े-बड़े पैग़म्बरों द्वारा ठुकरा दिये जाएंगे, आप अल्लाह से दुआ करेंगे ताकि हिसाब-किताब शुरू हो। अल्लाह तआला आप की दुआ सुन लेगा।

हिसाब-किताब के बाद, हर एक आदमी अपना रिकार्ड प्राप्त करेगा। जो लोग अपना रिकार्ड दाएँ हाथ में प्राप्त करेंगे वे लोग खुशहाल होंगे और जन्नत में जाएँगे, जबकि वे लोग जो अपना रिकार्ड अपने बाएँ हाथ में या पीछे से प्राप्त करेंगे वे बड़े बदनसीब होंगे। एक पुल, जो बाल से अधिक पतला और तलवार से अधिक तेज़ होगा, जहन्नम के ऊपर लगा दिया जाएगा। प्रत्येक आदमी को उस पुल को पार करना होगा, कुछ लोग इसे सही सलामत पार कर जाएँगे जबकि बाकी जहन्नम में गिर जाएँगे।

जन्नत का बयान

जन्नत इस्लामी टर्म में एक ऐसा घर है जिसे अल्लाह तआला ने ईमान वालों के लिए तैयार कर रखा है। इसमें सदा रहने वाली ऐसी नेमतें हैं जिन्हें किसी आँख ने देखा नहीं होगा, किसी कान ने सुना नहीं होगा या आदमी ने कल्पना नहीं किया होगा। इस में बड़ी

सुन्दर महिला साथी हैं, दूध की नदियाँ हैं, शराब और शुद्ध मधु की नदियाँ हैं और प्रत्येक प्रकार के मज़ेदार फल और मांस हैं। इस में रहने वाले थकावट, उकताहट या मौत का अनुभव नहीं करेंगे।

जहन्नम का बयान

जहन्नम एक ऐसा घर है जिसे अल्लाह तआला ने बेदीन (नास्तिकों) और उन लोगों के लिए तैयार कर रखा है जो अल्लाह को और उस के पैग़म्बर का इंकार करते हैं। इसका भोजन न सहन करने योग्य बहुत ही कड़वा होगा, और इसका पीना वह पीप होगा जो इसके निवासियों के चमड़े से निकलेगा। इसकी गहराई का अनुमान नहीं लगाया जा सकता है। नास्तिक या अधर्मी और मुनाफ़िक़ इसमें हमेशा रहेंगे।

कज़ा और क़द्र पर ईमान

क़ज़ा, अल्लाह का सामान्य फैसला है कि प्रत्येक आदमी मरेगा, जबकि 'क़द्र' अल्लाह का ख़ास फ़ैसला है, या 'क़ज़ा' का ही निर्वाह करना है, कि फलां आदमी फलां समय और फलां जगह पर मरेगा। इस चीज़ पर अल्लाह तआला ने सभी चीज़ों को पैदा किया है और इस के बारे में पूर्व में ही फ़ैसला कर दिया है।

क़द्र का अर्थ

१. अल्लाह तआला को हर चीज़ की जानकारी है जो कुछ हो रहा है, और उसका ज्ञान सभी चीज़ों को घेरे हुए है।

२. अल्लाह तआला ने सभी चीज़ का फ़ैसला ख़ास स्थान में पहले ही कर दिया है।

३. आकाश में या धरती में अल्लाह तआला की इच्छा और उसकी चाहत के बिना कुछ नहीं होता। अल्लाह तआला जो कुछ चाहता है वह होता है और जो नहीं चाहता है वह नहीं होता है।

४. अल्लाह सभी चीज़ों का पैदा करने वाला है। उसके अलावा कोई दूसरा पैदा करने वाला नहीं है।

● ● ●

स्वास्थ्य के नियम

इस्लामी शिक्षा आदमी के व्यक्तिगत और सामाजिक हर एक जीवन में रास्ता दिखलाने का काम करती है। ताकि मानव के शरीर, कपड़ा, भोजन, माहौल, व्यवहार, चरित्र, सोच और इरादों में शुद्धता और सफाई पैदा हो सके।

इस्लाम के स्वास्थ्य के नियम उस समय बेमिसाल दिखते हैं जबकि इसकी तुलना दूसरे धर्मों से की जाती है। इस्लाम में स्वास्थ्य के नियम का अर्थ व्यक्तिगत इच्छा पर नहीं है। बल्कि 'वुजू' इबादत का ज़रूरी हिस्सा है, एक धार्मिक इबादत के लिए पूर्व शर्त है। एक मुसलमान को प्रत्येक दिन अपने कपड़ों की सफाई के साथ पांच बार कम से कम फ़र्ज़ नमाज़ अदा करना है। साथ ही नमाज़ को शुद्ध और पाक साफ़ इरादों के साथ पवित्र स्थान पर अदा करना है। एक आदमी आसानी से उसके अच्छे प्रभाव एवं परिणाम को समझ सकता है जो एक मुसलमान इस काम को बार-बार करता है। मासिक धर्म

की मुद्दत पुरी होने के बाद, यौन सम्बन्ध स्थापित करने के बाद और ऐसी ही दूसरे अवसरों पर स्नान करना ज़रूरी है।

स्वास्थ्य के नियमों में से एक दाँत को धोना है ताकि दाँत की बीमारी और बदबूदार सांस की बीमारी को रोका जा सके। पांव एवं हाथ के नाखून काटना, मोंछ काटना, और नाभि के नीचे और बग़ल के बाल को साफ करना। यह सभी बातें साबित करती हैं कि इस्लाम केवल आदमी की अध्यात्मिक या रूहानी में ही मार्शदर्शन नहीं करता है बल्कि उसके शारिरिक स्वास्थ्य पर भी ध्यान देता है।

● ● ●

इस्लाम में महिलाऐं और परिवार

इस्लाम में महिलाओं को आने वाले वंशों की देख-भाल करने की ज़िम्मेदारी देकर उस का बड़ा सम्मान किया है। इस्लाम से पूर्व, धर के समान की तरह महिलाओं के साथ व्यवहार होता था, उसे अपने अधिकार से महरूम रखा जाता था इस हद तक कि उस का सब से बड़ा पुत्र अपने बाप की पत्नियों का भी वारिस होता था। इस्लाम से पूर्व दौर में बच्चियों को ज़िन्दा दफ़ना दिया जाता था। साथ ही दूसरी ऐसी कितनी तहज़ीब (संस्कृतियां) थीं जो महिलाओं को आदमी से कमतर समझती थीं।

इस्लाम केवल महिलाओं का सम्मान ही नहीं करता है, बल्कि उसे पुरूष पुत्री की नज़र से उसे उस को बराबर का स्थान देता है। अल्लाह तआला ने परहेज़गारी को यौन के आधार पर नहीं, सर्वोच्चता के आधार पर बनाया है।

वह कहता है :

"ऐ इंसानो, हम ने तुम को एक (ही) महिला और पुरुष से पैदा किया और तुम लोगों के लिए क़बीले बना दिए ताकि तुम एक-दूसरे को जान सको। अल्लाह के नज़दीक सब से सम्मान योग्य वही है जो तुम में सब से अधिक परहेज़गार है।" (४९:१३)

अल्लाह तआला ने महिला को अपनी संपत्ति का अपना मालिक बनाया है और उसे अपनी मर्ज़ी से बेचने का अधिकार दिया है जैसा कि वह जानती है वह अल्लाह के सामने जवाबदेह या उत्तरदायी है। यदि पत्नी अच्छी नहीं है, तो परिवार के देख-रेख की जवाबदेही शौहर की है। पति को पत्नी की संपत्ति पर दावा करने का उस वक़्त तक अधिकार नहीं है जब तक वह उसे अपनी इच्छा और मर्ज़ी से न दे दे। उस के अतिरिक्त अल्लाह तआला ने बच्चों को अपने माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करने का आदेश देकर माता-पिता को एक शानदार स्थान दिया है। अल्लाह कहता है:

"और तुम्हारे मालिक ने तुम को आदेश दिया है कि तुम केवल उसी की इबादत करो और अपने माता-पिता के साथ दयावान बनो। यदि उन में से कोई या दोनों बूढ़े हो जाऐं, तो उन को कभी भी उफ़्फ़ तक मत कहो और न ही उन को डांटो, बल्कि उन से अच्छे ढंग से बात करो।" (१७:२३)

अल्लाह तआला ने आदेश दिया है कि केवल उसी की इबादत या पूजा किया जाना चाहिए और इस आदेश के साथ, बच्चों को आदेश दिया

कि माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो। यह श्लोक (आयत) बताता है कि इस्लाम में माता-पिता का स्थान क्या है? फिर माता को अधिक आदर, सम्मान व दया का अधिकार है जैसा कि नीचे लिखी गई हदीस में है :

"एक आदमी ने अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा, "मेरे अच्छे व्यवहार का सब से अधिक अधिकार किस को है?'' आप ने फ़रमाया "तुम्हारी माँ।'' उस ने फिर पूछा फिर कौन? आप ने फ़रमाया "तुम्हारी माँ।'' और उस ने फिर यही प्रश्न दो बार दुहराया तो आप ने वही उत्तर दिया। चौथी बार आप ने फ़रमाया "तुम्हारे पिता।''

महिलाओं के लिए ड्रेस कोड (लिबास)

ग़ैर मुस्लिमों के बीच महिलाओं के कपड़े के संबंध में विवाद है। यह विवाद इस्लाम और उस के सिद्धांतों के न जानने के कारण पैदा होता है। वे लोग यह समझ बैठे हैं कि मुस्लिम महिलाऐं अपने घरों में कैद हैं, अपने अधिकारों से वंचित हैं। वे लोग मुस्लिम महिलाओं को अपनी संस्कृति की दृष्टि से देखते हैं, जिस में महिलाओं ने उस की संकीर्णता के ख़िलाफ़ बग़ावत किया और अपने को बीते कल के बंधनों से आज़ाद कर लिया। यह ग़ैर मुस्लिम महिलाओं की ग़लत सोच है। यह इस हक़ीकत की वजह से है कि पश्चिमी महिलाओं ने न तो वर्तमान में और न ही बीते कल में आज़ादी के सच्चे अर्थ को समझा पुराने दौर से लेकर नए जागुरुकता तक और युरोप के

औधोगिक क्रांति के दौर से लेकर वर्तमान टेकनोलाजी के दौर तक, वे लोग एक गुलामी से दूसरी गुलामी में प्रवेश करते गए हैं, और यह सब उनकी अपनी आज़ाद इच्छा के अनुसार है, जिनका सोंचना केवल अंत तक आज़ादी ही हैं, जब कि यह दूसरे भेस में केवल गुलामी है। वे लोग अधनंगे अपने घरों से बाहर जाते हैं कि उन की शरीरिक बनावट की एक सीमा है और ये कि उनका निश्चित काम निश्चित उद्देश्य के लिए है। पश्चिम. में परिवारों का विनाश इस के परिणाम के रूप में साफ तौर पर देखा जा सकता है।

महिलाओं का इस्लाम में नक़ाब पहनना कोई संस्कृतिक रीति या तहज़ीब नहीं है, जो विरासत में दूसरी पुरानी संस्कृति से मिली है। यह आदेश है उस एक अल्लाह का जिस ने इंसानों को पैदा किया। अपनी असीम बुद्धिमता के कारण उस ने महिलाओं को इस का आदेश दिया।

पुरुष और महिलाऐं दोनों ही यौन इच्छा के साथ पैदा किए गए हैं। अल्लाह तआला ने इन इच्छाओं की पूर्ति के लिए ख़ास क़ानून और रास्ते बता दिया है और पुरुष और महिला के बीच रख-रखाव और अच्छे संबंध की रक्षा की है और उसकी भलाई के लिए सभी प्रकार के ग़लत यौन संबंधों से मना किया है। इन नियमों के पालन से ही स्वस्थ परिवार और स्वस्थ समाज की स्थापना हो सकेगी।

● ● ●

नतीजा

इस्लाम अल्लाह तआला का धर्म है जिसे इंसान के लिए चुना गया है। उस ने कहा:

"नि:संदेह धर्म जिसे अल्लाह के द्वारा स्वीकार गया इस्लाम है।" (३:१९)

इस का अर्थ है कि यह पैग़ाम पूरी दुनिया के लिए है। इस हक़ीक़त के बाद आदमी को तरक़्क़ी और विकास के लिए किसी नए क़ानून को ढूंढने की कोई आवश्यकता नहीं है जो हर एक आयु और जीवन के लिए योग्य हो सके। यह जीवन जीने का एक ऐसा मार्ग है जो आदमी के जीवन के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक आदि प्रत्येक पहलू को प्रभावित करता है। इस्लाम प्रत्येक समस्या का निदान रखता है। यह एक पवित्र पैग़ाम है जिसे इंसानों तक पहुँचाने के लिए अल्लाह तआला ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को चुना।

आदमी के लिए उस ने अपनी अंतिम किताब कुरआन को उतारा जिस में न बदलने वाला क़ानून है।

अब आप ने इस किताब को पढ़ लिया है, और इस्लाम के केन्द्रीय सिद्धांतों के बारे में अधिक जानकार हो गए, अब आप के ऊपर चुनने की ज़िम्मेदारी है। प्रत्येक आदमी एक ही दिशा में अग्रसर है, परन्तु वह रास्ता जिसे वह चुनता है वह उसके दूसरी दुनिया के उद्देश्य के इरादे को दर्शाता है।

अल्लाह तआला बहुत दयावान मेहरबान है और वह अन्याय से बहुत दूर है। वह कहता है:

> "जब तक हम एक संदेष्टा को नहीं भेज देते तब तक किसी को सज़ा नहीं देते।" (१७:१५)

आप से हमारे संबंध के बाद, हम ने आप तक यह संवाद और पैग़ाम पहुंचा दिया है।

● ● ●

इस्लाम के बारे में कुरआनी आयात और हदीसें

कुरआनी आयात

"यह (कुरआन) किताब है, जिस में कोई संदेह नहीं है, एक मार्गदर्शन है उनके लिए जो 'मुत्तक़ीन' हैं (ईश्वरभक्त परहेज़गार और अल्लाह से बहुत डरने वाले हैं (सभी प्रकार के गुनाहों से बचते हैं जिन से अल्लाह ने मना किया है और अल्लाह से बहुत प्यार करते हैं और अल्लाह ने जिन अच्छे कामों के करने का हुक्म दिया है वे करते है)" (२:२)

"अल्लाह ने इस (सच्चे) धर्म को चुन लिया है, इस लिए तुम मुसलमान हो करके ही मरो।" (२:१३२)

"और जो कोई इस्लाम के अलावा दूसरे धर्म को ढूंढता है, वह उस से कभी नहीं स्वीकारा जाएगा, और क़यामत के दिन वह घाटा उठाने वालों में से होगा।" (३:८५)

"आज के दिन मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारे धर्म को पूरा कर दिया, तुम पर अपनी कृपा मुकम्मल कर दी, और तुम्हारे लिए इस्लाम को धर्म की हैसियत से चुन लिया है।" (५:३)

"वास्तव में जो लोग अल्लाह और उस के संदेष्टा में विश्वास नहीं रखते और अल्लाह और उसके संदेष्टा के बीच भेद बरतना चाहते हैं (अल्लाह पर ईमान ला कर और उस के पैग़म्बर का इंकार कर के) कहते हैं 'हम कुछ पर विश्वास करते हैं परन्तु दूसरी बातों को नकारते हैं' और बीच का रास्ता अपनाना चाहते हैं।" (४:१५०)

"वही है जिस ने अपने संदेष्टा (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को सही रास्ता दिखलाने और सच्चे धर्म (इस्लाम) के साथ भेजा है, ताकि उसे तमाम धर्मों पर सर्वोच्चता प्राप्त करे चाहे 'मुश्रिकीन (अनेक ईश्वर को माननने वाले, मूर्तियों की पूजा करने वाले, अल्लाह के एक होने का इंकार करने वाले) को (यह) कितना ही बुरा लगे।" (९:३३)

"क्या वह आदमी जिस का सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिए खोल दिया है तो वह अपने मालिक की ओर से एक नूर (रौशनी) पर है, और तबाही है उन पर जिन के दिल अल्लाह की याद से (प्रभाव नहीं लेते बल्कि) कठोर हो गए हैं। यह लोग खुली गुमराही में हैं।" (३९:२२)

"वही है जिसने अपने संदेष्टा (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को सही रास्ता दिखलाने और सच्चे धर्म (इस्लाम) के साथ भेजा है, कि वह उसे (इस्लाम को) तमाम धर्मों में ग़ालिब बना दे। और अल्लाह गवाह होने के नाते काफ़ी है।" (४८:२८)

"ऐ इंसानो! अपने मालिक (अल्लाह) की इबादत करो, जिस ने तुम को और तुम से पहले के लोगों को पैदा किया ताकि तुम लोग 'मुत्तक़ीन' (परहेज़गार अल्लाह से बहुत डरने वाले) बन सको।" (२:२१)

"जिसने तुम्हारे लिए धरती को बिछौना और आकाश को छत बनाया और आकाश से पानी उतार कर उस से फल पैदा करके तुम्हें रोज़ी दी, होशियार जानने के बावजूद अल्लाह के साथ किसी को साझी मत बनाओ।" (२:२२)

इस्लाम के बारे में कुछ हदीसें

अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि अल्लाहु अन्हुमा ने बयान किया : एक आदमी ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा, "इस्लाम की कौन सी बातें अच्छी हैं?" पैग़म्बर ने जवाब दिया, "(दूसरों को) खिलाना और जिसे जानते हो और जिसे नहीं जानते हो उन से सलाम करना।" (बुख़ारी:११)

अबू सईद खुदरी रज़ि अल्लाहु अन्हु ने बयान किया कि अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "यदि एक

आदमी इस्लाम शुद्ध मन से कुबूल करता है, तो अल्लाह उस के पिछले किए गए सारे पापों को माफ़ कर देगा, और उस के बाद मामलात का निपटारा शुरू होता है: उस के अच्छे कामों का बदला दस गुना से सात सौ गुना तक हर एक अच्छे काम के लिए मिलेगा, और बुरे काम का रिकार्ड उस वक़्त तक रखा जाएगा जब तक कि अल्लाह उसे माफ़ न कर दे।'' (बुखारी:३९)

अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहु अन्हु ने बयान किया कि अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "हर एक बच्चा 'फ़ितरत, (इस्लामी एकेश्वरवाद या तौहीद के सच्चे ईमान) पर पैदा होता है परन्तु उसके माता-पिता उसे यहूदी, ईसाई या मजूसी बना देते हैं, जैसा कि एक जानवर एक मुकम्मल बच्चे को जन्म देता है। क्या तुम उस के अंग कटे-फटे पाते हो? तब अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहु अन्हु ने यह पाक आयत पढ़ी : "अल्लाह की फ़ितरत है जिस पर उसने इंसान को पैदा किया। कोई बदलाव नहीं है ख़लक़िल्लाह में (यानी अल्लाह का धर्म जो सीधा धर्म (इस्लाम) है।'' (बुखारी: १३५९)

अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहु अन्हु ने बयान किया कि अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, 'मेरे सभी साथी जन्नत में जाऐंगे सिवाय उस के जो इंकार करता है।''

लोगों ने कहा, "ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! कौन इंकार करेगा? आप ने फ़रमाया, "जो कोई मेरी बात मानता है जन्नत में जाएगा, और जो कोई बात नहीं मानता है वही है जो इंकार करता है।" (बुखारी :७२८०)

● ● ●

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आने की बाइबल की भविष्यवाणी

जौन १४:१५-१६

"यदि तुम मुझ से प्रेम करते हो तो मेरे आदेश का पालन करो और मैं पिता से दुआ करूंगा और वह तुम को दूसरा तसल्ली देने वाला देगा जो कि तुम्हारे साथ सदा रहेगा।''

जौन १५:२६-२७

"परन्तु जब वह तसल्ली देने वाला आता है, जिसको मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूंगा, सत्य की आत्मा भी, जो पिता की ओर से होगा, वह मेरी गवाही देगा : और तुम लोग भी गवाही दोगे, क्योंकि तुम मेरे साथ शुरू से रहे हो।''

जौन १६:५-८

"लेकिन अब मैं उस की ओर जाता हूँ जिसने मुझ को भेजा और तुम में से किसी ने मुझ से नहीं पूछा, 'आप किधर जाऐंगे?' परन्तु क्योंकि मैं तुम सब को कह चुका हूँ, दुख ने तुम्हारे दिल को भर दिया है। फिर भी मैं तुम से सत्य कहता हूँ, क्योंकि यदि मैं नहीं जाता हूँ, वह तसल्ली देने वाला तुम्हारे पास नहीं आएगा, लेकिन मैं अगर रवाना होता हूँ, तो मैं उन्हें तुम्हारी ओर भेजूंगा। और जब वह आते हैं, वह पाप की दुनिया को झिड़केंगे और परहेज़गारी और इंसाफ़ को क़ायम करेंगे।"

जौन १६:१२-१४

"मेरे पास अभी भी तुम्हें कहने के लिए बहुत कुछ है, परन्तु अब तुम उन्हें बरदाश्त नहीं कर सेकते हो। कैसे क्या होगा जब वह, नेक आत्मा, आऐंगे, वह तुम्हारा, सभी सच्चाई में, सही रास्ता दिखाऐंगे, वह खुद कुछ नहीं कहेंगे, और वह तुम को आने वाली चीज़ें दिखलाऐंगे। वह मेरी तारीफ़, क्योंकि वह मुझे प्राप्त करेंगे, और वह इसे तुम लोगों को दिखाऐंगे।"

जौन १६:१६

और थोड़ी देर तुम मुझे नहीं देखोगे, और दुबारा थोड़ी देर के लिए, तुम लोग मुझे देखोगे, क्योंकि मैं पिता की आरे जाता हूँ।"

(मुस्लिम उलमा ने बताया है कि वह व्यक्ति जिस के आने की बात ईसा अलैहिस्सलाम के बाद खुद उनके द्वारा ऊपर की आयतों में की

गई है वह बात अल्लाह के पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अधिक किसी दूसरे पर नहीं बैठती है। यह 'व्यक्ति' जिनके बारे में ईसा अलैहिस्सलाम ने अपने आने की भविष्यवाणी की है, उन्हें बाईबल में 'फ़ारकलीत' कहा गया है। इस शब्द को बाद के व्याख्याओं और अनुवादकों के द्वारा हटा दिया गया अैर उसे 'सत्य की आत्मा' से बदल दिया गया, और आगे 'तसल्ली देने वाले' से और कभी 'पंवित्र आत्मा' से बदल दिया गया। यह मूल शब्द यूनानी है और उस का अर्थ है 'वह आदमी जिस की बहुत ज़्यादा तारीफ़ की गई हो।'' अरबी भाषा में मुहम्मद का अर्थ भी यही है।)

● ● ●

हमारी अन्य अहम खूबसूरत और मालूमाती पुस्तकें